Mahila college Dalmianagar
Department of History
B.A- II (Hons)

Dr. Anu kumari
Date - 19/02/2021

Topic:-
पल्लव राजवंश का शेष भाग

नरसिंहवर्मन प्रथम (630-668) :-

महेन्द्रवर्मन का पुत्र नरसिंहवर्मन एक महान शासक हुआ। उसके समय में भी पल्लवों का बादामी के चालुक्यों से संघर्ष हुआ। पुलकेशिन द्वितीय ने उसके राज्य पर आक्रमण किया परन्तु नरसिंहवर्मन ने उसे तीन स्थानों पर पराजित किया। जिसके कारण पुलकेशिन को वापस लौटना पड़ा। उसके पश्चात नरसिंहवर्मन ने चालुक्य-राज्य पर आक्रमण किया और 642 ई० में उसकी राजधानी बादामी पर अधिकार कर लिया। इसी युद्ध में पुलकेशिन द्वितीय मारा गया और पल्लवों ने चालुक्य-राज्य के दक्षिणी भाग पर अधिकार कर लिया। नरसिंहवर्मन ने चालुक्यों की शक्ति को दुर्बल करके मैसूर तक अपने राज्य का विस्तार कर लिया। उसके पश्चात् उसने चोल, चेर तथा पाण्ड्य शासकों को पराजित करके दक्षिण की ओर अपने राज्य का विस्तार किया। उसने अपने समर्थक मानवर्मन की सहायता के लिए लंका पर समुद्री मार्ग से दो बार आक्रमण किये और उसे लंका के सिंहासन पर बैठाने में सफलता पायी। परन्तु 665 ई० में चालुक्य शासक विक्रमादित्य ने नरसिंहवर्मन को पराजित करके पल्ल

Scanned with CamScanner

अपने वंश के खोये हुए प्रदेशों को पुनः प्राप्त कर लिया। तब भी नरसिंहवर्मन् ने पल्लवों के एक विस्तृत साम्राज्य का निर्माण करने में सफलता प्राप्त की। नरसिंहवर्मन् ने मामल्लपुरम् में अनेक मंदिरों का निर्माण कराया जो अब मामल्लपुर के रथ-मन्दिर कहलाते हैं। उसने त्रिचनापल्ली में भी अनेक मन्दिर बनवाये। उसके समय में चीनी-यात्री हुएन त्सांग काँची गया था और उसने वहाँ का बहुत अच्छा वर्णन लिखा।

नरसिंहवर्मन् के पुत्र महेन्द्रवर्मन द्वितीय (668-670 ई०) ने केवल दो वर्ष शासन किया। उसके पश्चात् उसका पुत्र परमेश्वरवर्मन प्रथम (670-700 ई०) सिंहासन पर बैठा। उसके समय में चालुक्य विक्रमादित्य प्रथम ने काँची पर आक्रमण करके उसे जीत लिया और त्रिचनापल्ली की ओर बढ़ा। परन्तु पेरुवलनल्लूर नामक स्थान पर परमेश्वरवर्मन् प्रथम ने उसे परास्त किया और पल्लव-राज्य को सुरक्षित करने में सफलता पायी। विक्रमादित्य को अपने राज्य में वापस जाना पड़ा।

नरसिंहवर्मन् द्वितीय (700-722 ई०) :— परमेश्वरवर्मन् के पुत्र नरसिंहवर्मन् द्वितीय का समय शांति का रहा। उसके समय में राज्य में समृद्धि बढ़ी। उसने चीनी सम्राट के दरबार में अपना राजदूत भेजा। उसने काँची में कैलाशनाथ मन्दिर और महाबलीपुरम् के समुद्र-तट पर कई सुन्दर मन्दिर बनवाये। उसके मन्दिर निर्माण शैली में एक नई शैली राजसिंह शैली का प्रयोग किया। अतः इस मन्दिर को राजसिंहेश्वर मंदिर भी अभिहित किया गया है। वह विद्वा

Scanned with CamScanner

को आश्रय प्रदान करता था। उसके समय में विद्वान दण्डिन ने दशकुमारचरित नामक गद्य-ग्रन्थ की रचना की।

~~महेन्द्रवर्मन द्वितीय (लगभग 728 ई० से 731 ई०)~~ :—

नन्दिवर्मन द्वितीय (730-800 ई०) — नन्दिवर्मन परमेश्वरवर्मन द्वितीय का पुत्र न था बल्कि सम्बंधी था। उसे चुनाव के द्वारा शासक बनाया गया था। इस कारण कुछ राजपुत्रों ने उसका विरोध किया। परन्तु वे असफल हुए। नन्दिवर्मन के समय में निकट के पड़ोसी राज्यों ने पल्लवों पर आक्रमण किये। सर्वप्रथम पाण्ड्य-शासक राजसिंह ने उसके राज्य पर आक्रमण किया। परंतु उसे वापस लौटना पड़ा। राजसिंह के उत्तराधिकारी के समय में भी यह संघर्ष चलता रहा और अंत में पाण्ड्य-शासक जटिल परान्तक ने नन्दिवर्मन से कोंगु को छीनने में सफलता पायी। चालुक्य-शासक विक्रमादित्य द्वितीय ने भी नन्दिवर्मन की दुर्बलता का लाभ उठाया और कुछ समय तक कांची को अपने अधिकार में रखने में सफलता पायी। विक्रमादित्य के पुत्र कीर्तिवर्मन ने दोबारा पल्लव-राज्य पर आक्रमण किया और उसकी सम्पत्ति को लूटा। 750 ई० के लगभग राष्ट्रकूट-शासक दन्तिदुर्ग ने भी पल्लवों पर आक्रमण करके उन्हें परास्त किया। नन्दिवर्मन ने दन्तिदुर्ग से अपनी पुत्री का विवाह करके अच्छे सम्बन्ध बनाये। बाद में भी उसे राष्ट्रकूट-सम्राट ध्रुव को प्रसन्न करने के लिए बहुत धन देना पड़ा। नन्दिवर्मन की एकमात्र सफलता गंग-राज्य के विरुद्ध रही जिसके कुछ भाग पर उसने अधिकार कर लिया।

अन्य वर्मन के समय में कुछ पाण्ड्य, चालुक्य और राष्ट्रकूट राज्यों के आक्रमणों ने पल्लव-राज्य की शक्ति

Scanned with CamScanner

को पर्याप्त दुर्बल कर दिया। नन्दिवर्मन के पश्चात् दन्तिवर्मन (800-846) आरूढ़ हुआ। उसके समय में राष्ट्रकूटों और पाण्ड्यों के आक्रमण हुए तथा पाण्ड्यों ने उससे कावेरी-क्षेत्र छीन लिया। दन्तिवर्मन के पश्चात् नन्दिवर्मन तृतीय, नृपतुंगवर्मन और अपराजित आरूढ़ हुए। अपराजित ने 880 ई० में पाण्ड्यों को पराजित करने में सफलता पायी। परन्तु वह पल्लवों का अंतिम सफल युद्ध था। इस युद्ध में अपराजित के चोल-वंशीय सामन्त आदित्य ने उसकी बड़ी सहायता की थी। उसी आदित्य ने 890 ई० के लगभग अपराजित को मारकर पल्लव-राज्य पर अपना अधिकार कर लिया और चोल राजवंश के साम्राज्य की नींव डाली।

परमेश्वरवर्मन द्वितीय (लगभग 728-730 ई० तक):

परमेश्वरवर्मन द्वितीय नरसिंहवर्मन द्वितीय का पोता था उसने 728 ई० के लगभग राजसिंहासन को सुशोभित किया। इसके शासनकाल में वातापि के चालुक्य नरेश विक्रमादित्य द्वितीय ने गंग शासक दुर्विनीत ऐरेयप्प की सहायता से पल्लवों पर आक्रमण किया था। इसमें चालुक्य नरेश को बहुत धन प्राप्त हुआ। सम्भवतः इस युद्ध में परमेश्वरवर्मन मारा गया।